सम्पादकीय

बाबर के लश्कर का अभी अंत नहीं हुआ है

बाबर ने 1521 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया था। इस्लामी सेनाओं के आक्रमण भारत पर उससे से भी पहले शुरु हो गए थे। उनका मकसद भारत को भी ईरान बनाना था। अरब की इस्लामी सेनाओं ने जब सातवीं शताब्दी में ईरान पर आक्रमण करके उसे जीत लिया तो लगभग तीन दशकों के भीतर उसकी सभ्यता, संस्कृति, इतिहास को समाप्त कर उसे इस्लामी स्वरूप में परिणित कर दिया। इस्लामी सेनाएं भारत में भी यही प्रयोग करना चाहती थीं। उन्हें इसमें आंशिक सफलता ही मिल रही थी। अरबी, अफगानी, ईरानी, तुर्की, पठानी इस्लामी सेनाएं भारत में आपस में भी लड़ती थीं। लेकिन इन सभी शासकों के लिए एक उद्देश्य समान था। वह था भारत का इस्लामीकरण। प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी ने बाबर के इसी आक्रमण का जिक्र करते हुए लिखा है-

तिलंग महला-1

जैसी मै आवै, खसम की बाणी,
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।
पाप की जंझ लै काबलहु धायिआ
जोरी मंगै दानु बे लालो।।
सरमु धरमु दुयि छपि खलोए
कूडु फिरे परधानु वे लालो।।

....

काइआ कपडु टुकु टुकु होसी
हिंदुसतानु समालसी बोला।
आवनि अठतरै जानि सतानवै
होरु भी उठसी मरद का चेला।।
सच की बाणी नानकु आखै,
सचु सुणायिसी सच की बेला।।२।।३।।५।।

गुरु नानकदेव जी ने बाबर के आक्रमण का बहुत सटीक वर्णन किया है। काबुल से जिस फौज को लेकर उसने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया है, वह मानो अत्याचार, पाप, अन्याय और अधर्म की बारात है। इसी सेना के बलबूते पर वह हिन्दुस्तान पर कब्जा करना चाहता है। मानों सत्तारूपी कन्या का बलपूर्वक कन्यादान मांग रहा हो।

गुरु नानकदेव जी बाबर के इस आक्रमण के दीर्घकालीन दुष्प्रभावों को जानते थे। इसीलिए उन्होंने आगे कहा, यह एक ऐसी दुर्घटना है, जिसे देश कभी भुला नहीं सकेगा और बाणी की इन पंक्तियों का चिंतन अवश्य करेगा। लेकिन गुरु नानकदेव जी जानते थे कि बाबर की यह अत्याचार और अधर्म की जंग ज्यादा देर नहीं चल सकती। मुगलों को अंततः जाना ही पड़ेगा। इसीलिए उन्होंने ऐसा संकेत दिया कि आज मुगल सेना सम्वत् अठहत्तर में आयी है और सम्वत् सतानवें में चली जाएगी। सम्वत् का प्रयोग तो शायद उन्होंने प्रतीकात्मक रूप में ही किया हो। लेकिन मुगल सेना किस प्रकार जाएगी इसका स्पष्ट संकेत उन्होंने आगे दे दिया जब उन्होंने कहा-

'होरु भी उठसी मरद का चेला।'

गुरु नानकदेव जी के इसी संकेत के अनुसार बाद के इतिहास में अनेक मरद के चेले उठे। उनमें शिवाजी मराठा भी थे, महाराणा प्रताप भी थे और वह रणजीत सिंह भी थे, जो इस सेना का पीछा करते हुए अफगानिस्तान तक पहुंच गए थे। परन्तु यह लड़ाई अभी भी जारी है। भारत की पहचान को बदलने के प्रयास अभी भी जारी हैं। मुम्बई की आतंकवादी घटना ने बाबरों की नई चालें है। नाम बदल गए हैं। सम्वत् बदल गए हैं। लेकिन हिन्दुस्तान भी वही है और पाप और अधर्म की वही बाबरी सेना अभी भी भारत पर अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए आक्रमण कर रही है। **मुम्बई में आतंकवादियों ने जो आक्रमण किया है वह इसी निरन्तरता का प्रतीक है।** परन्तु इस बार सारे भारत को 'मरद का चेला' बनकर खड़ा होना होगा तभी अधर्म की इस बाबरी सेना को परास्त किया जा सकता है। इस ईश्वरीय बाणी, स्वामी की बाणी या खसम की बाणी को शत् शत् नमन। - **डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**